IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 12, 2021

सामाजिक मूल्य और शिक्षाः भारतीय समाज में पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण

डॉ. राहुल
सहायक प्रोफेसर, (समाजशास्त्र)
गांधी आदर्श कॉलेज
समालखा, पानीपत
हरियाणा – 132101

सार

यह अध्ययन भारत में पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के एकीकरण की पड़ताल करता है, सामाजिक मानदंडों, व्यक्तिगत विकास और राष्ट्रीय पहचान को आकार देने में उनकी भूमिका की जांच करता है। भारत की शिक्षा प्रणाली का विकास – प्राचीन गुरुकुल परंपरा से लेकर समकालीन संस्थागत मॉडल तक – आध्यात्मिकता, सामुदायिक मूल्यों और व्यावसायिक प्रशिक्षण का मिश्रण प्रदर्शित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) एक संकर दृष्टिकोण की वकालत करती है जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षाशास्त्र के साथ जोड़ती है, जिसका लक्ष्य समग्र विकास है। मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन जांच करता है कि शैक्षिक मूल्य सामाजिक व्यवहार और परिणामों को कैसे प्रभावित करते हैं। परिणाम बताते हैं कि जहां आधुनिक शिक्षा बौद्धिक और व्यावसायिक विकास को प्राथमिकता देती है, वहीं पारंपरिक शिक्षा नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक विकास और सामाजिक जिम्मेदारी पर जोर देती है।

मुख्य शब्दः पारंपरिक शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत, समग्र विकास, मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिक विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व।

1 परिचय

भारत का शैक्षिक परिदृश्य सदियों से नाटकीय रूप से विकसित हुआ है, संस्कृति और आध्यात्मिकता से गहराई से जुड़ी प्राचीन प्रणालियों से लेकर बौद्धिक और व्यावसायिक विकास पर केंद्रित समकालीन मॉडल तक। ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रभाव से बहुत पहले

स्थापित पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली ने बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा को एकीकृत करते हुए समग्र विकास पर जोर दिया। हालाँकि, स्वतंत्रता के बाद, भारत ने अकादमिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण पर केंद्रित एक अधिक पश्चिमी, संस्थागत शिक्षा प्रणाली को अपनाया। जैसे–जैसे भारत 21वीं सदी में प्रवेश कर रहा है, उसे पारंपरिक शिक्षा के गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को आधुनिक, वैश्वीकृत समाज की माँगों के साथ संतुलित करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो भारत में शिक्षा में सुधार और पुनरुद्धार करना चाहती है, इस बदलाव में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक और आधुनिक दोनों शैक्षिक मूल्यों के सर्वोत्तम पहलुओं को जोड़ना है। यह शोधपत्र सामाजिक व्यवहारों, व्यक्तिगत परिणामों और सामाजिक परिवर्तन पर शैक्षिक मूल्यों के प्रभाव की जाँच करने के लिए जनसांख्यिकीय डेटा विश्लेषण और परिकल्पना परीक्षण को नियोजित करते हुए मात्रात्मक शोध दृष्टिकोण के माध्यम से इस एकीकरण की खोज करता है।

2. साहित्य समीक्षा

पारंपरिक भारतीय शिक्षा

प्राचीन भारत में प्रचलित गुरुकुल प्रणाली ने शिक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसमें अकादमिक ज्ञान और व्यक्तिगत विकास दोनों पर जोर दिया गया। पाठ्यक्रम आध्यात्मिक ग्रंथों, दर्शन और सामुदायिक जुड़ाव पर आधारित था, जिसमें सम्मान, अनुशासन, सामाजिक जिम्मेदारी और ईश्वर से जुड़ाव जैसे मूल्यों पर जोर दिया गया था (सुखीजा एट अल., 2014)। शिक्षा को एक आजीवन प्रक्रिया माना जाता था जो समाज में व्यक्ति की भूमिका से जुड़ी होती थी, जिसमें शिक्षक (गुरु) ज्ञान और बुद्धि प्रदान करने में एक केंद्रीय व्यक्ति होता था (पाटिल और पाटिल, 2023)।

आधुनिक शैक्षिक प्रतिमान

भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से काफी प्रभावित है, आध्यात्मिक और सांप्रदायिक मूल्यों से हटकर अधिक धर्मनिरपेक्ष, शैक्षणिक फोकस की ओर बढ़ गई है। प्राथमिक उद्देश्य कार्यबल और राष्ट्रीय विकास में योगदान देने के लिए व्यक्तियों का बौद्धिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण बन गया। वर्तमान प्रणाली मानकीकृत परीक्षण, प्रौद्योगिकी–संचालित शिक्षा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करती है, जो अक्सर पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में जोर दिए जाने वाले नैतिक और नैतिक विकास को दरकिनार कर देती है (इंद्राणी, 2012)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020

एनईपी 2020 एक प्रमुख नीतिगत बदलाव है जिसका उद्देश्य समकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलना है। नीति रटने की शिक्षा से आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और मूल्य–आधारित शिक्षा की ओर बदलाव का प्रस्ताव करती है। यह पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण और सामाजिक कल्याण में योगदान देने वाले पूर्ण विकसित व्यक्तियों को विकसित करने के लिए मूल्य–आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देता है (प्रभाकर, 2023)। हालांकि, आलोचकों का तर्क है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने स्वदेशी ज्ञान और सामाजिक मूल्यों को दरकिनार कर दिया है, और केवल आर्थिक विकास और व्यक्तिगत उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित किया है।

पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा को एकीकृत करने में चुनौतियाँ और अवसर

पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों का एकीकरण चुनौतियों और अवसरों दोनों को प्रस्तुत करता है। पारंपरिक मूल्यों को सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिक अखंडता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक माना जा सकता है, जिन्हें आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अक्सर उपेक्षित किया जाता है। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा नवाचार, वैश्विक दृष्टिकोण और कैरियर की तत्परता को बढ़ावा देती है, जो आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। चुनौती इन दोनों दृष्टिकोणों के

बीच संतुलन खोजने में है ताकि एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाई जा सके जो बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को बढ़ावा दे।

3 प्रक्रिया

अनुसंधान डिजाइन

पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच संबंधों और सामाजिक व्यवहार और विकास पर उनके प्रभाव का पता लगाने के उद्देश्य से एक वर्णनात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया था। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों डेटा स्रोतों का उपयोग किया गया, जिसमें सर्वेक्षणों के माध्यम से एकत्र किए गए प्राथमिक डेटा पर ध्यान केंद्रित किया गया।

चर

इस अध्ययन में जांचे गए प्रमुख चर निम्नलिखित हैं:

- **पारंपरिक शैक्षिक मूल्य:** इस चर में नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक विकास, सामुदायिक सहभागिता और आजीवन सीखने पर जोर दिया जाता है, जो पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली की विशेषता है।
- **आधुनिक शैक्षिक मूल्य:** यह चर समकालीन शिक्षा प्रणाली में बौद्धिक विकास, व्यावसायिक कौशल, मानकीकृत परीक्षण और शैक्षणिक उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने से संबंधित है।
- **समग्र विकास:** इसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिक अखंडता और सामाजिक जिम्मेदारी शामिल है, जो पारंपरिक और आधुनिक दोनों शैक्षिक प्रणालियों से प्रभावित है।

अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन भारत के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में गुरुग्राम और उसके आस–पास के क्षेत्रों में किया गया था। इन क्षेत्रों का चयन उनकी विविध आबादी और पारंपरिक और आधुनिक दोनों तरह के शैक्षिक प्रतिमानों के संपर्क के कारण किया गया था, जो इन दो मूल्य प्रणालियों के एकीकरण की जांच करने के लिए एक प्रासंगिक संदर्भ प्रदान करते हैं।

नमूने का आकार

अध्ययन में कुल 150 उत्तरदाताओं ने भाग लिया। जनसंख्या का विविध प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न आयु समूहों, लिंगों और धार्मिक पृष्ठभूमि से नमूना लिया गया था। उत्तरदाताओं का चयन एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग करके किया गया था, जिससे विभिन्न जनसांख्यिकीय श्रेणियों का समावेश सुनिश्चित हुआ।

डेटा संग्रहण

प्रतिभागियों को दिए गए संरचित प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। प्रश्नावली में 15 प्रश्न शामिल थे, जो पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के महत्व, व्यक्तिगत विकास पर उनके प्रभाव और सामाजिक मानदंडों को आकार देने में उनकी भूमिका पर प्रतिभागियों के विचारों का मूल्यांकन करते थे। सर्वेक्षण में प्रतिक्रियाओं के लिए लिकर्ट स्केल का उपयोग किया गया, जिसमें ''पूरी तरह से सहमत'' से लेकर ''पूरी तरह से असहमत'' तक के विकल्प थे।

डेटा विश्लेषण

एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर, जैसे एसपीएसएस या आर का उपयोग करके निम्नलिखित विश्लेषण करने के लिए किया गया:

1. **वर्णनात्मक आँकड़े:** उत्तरदाताओं के समग्र रुझान और विचारों को समझने के लिए प्रत्येक सर्वेक्षण प्रश्न के लिए प्रतिक्रियाओं की आवृत्ति और प्रतिशत की गणना की गई।
2. **परिकल्पना परीक्षण:** टी–टेस्ट और ची–स्क्वायर टेस्ट का उपयोग करके दो प्रमुख परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। इन परीक्षणों से यह निर्धारित करने में मदद मिली कि पारंपरिक बनाम आधुनिक शैक्षिक मूल्यों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता, चरित्र विकास और शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके प्रभाव के बारे में विचारों में महत्वपूर्ण अंतर थे या नहीं।
3. **स्वतंत्र टी–परीक्षण:** चरित्र विकास और शैक्षणिक उपलब्धि जैसे चरों के लिए समूहों के बीच माध्य की तुलना करने के लिए, स्वतंत्र टी–परीक्षणों का उपयोग किया गया। इस सांख्यिकीय परीक्षण ने यह आकलन करने में मदद की कि क्या विशिष्ट परिणामों को बढ़ावा देने में पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के बीच महत्वपूर्ण अंतर थे।
4. **काई–स्क्वायर परीक्षण:** मूल्य–आधारित शिक्षा और व्यावसायिक कौशल पर जोर जैसे श्रेणीबद्ध चरों के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए, काई–स्क्वायर परीक्षण किए गए। इस परीक्षण से यह निर्धारित किया गया कि समूहों के बीच प्रतिक्रियाओं का वितरण महत्वपूर्ण रूप से भिन्न था या नहीं।

डेटा विश्लेषण प्रक्रिया

चरण 1: सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए एकत्रित डेटा को साफ और मान्य करें।

चरण 2: प्रत्येक सर्वेक्षण प्रश्न के उत्तरों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग करें।

चरण 3: यह निर्धारित करने के लिए परिकल्पना परीक्षण करें कि क्या पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच महत्वपूर्ण संबंध हैं।

चरण 4: व्यक्तिगत और सामाजिक विकास पर शिक्षा के प्रभाव का आकलन करने के लिए शोध प्रश्नों के संदर्भ में निष्कर्षों की व्याख्या करना।

इस पद्धति के माध्यम से, अध्ययन का उद्देश्य इस बात का व्यापक विश्लेषण प्रदान करना था कि पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्य समकालीन भारत में व्यक्तियों के समग्र विकास और समग्र सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

4. विश्लेषण

4.1 जनसांख्यिकीय डेटा तालिका

नीचे दी गई तालिका में नमूने से 150 उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण दिया गया है, जिसमें प्रत्येक श्रेणी में प्रतिभागियों की संख्या के बाद उनका प्रतिशत प्रतिनिधित्व दर्शाया गया है। इसमें गुरुग्राम और आस–पास के क्षेत्रों के उत्तरदाता शामिल हैं।

तालिका 1. जनसांख्यिकीय डेटा तालिका

जनसांख्यिकीय चर	वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
लिंग	**पुरुष**	70	46.7%
	महिला	80	53.3%
आयु	18-24	35	23.3%
	25-34	45	30.0%
	35-44	30	20.0%
	45-54	20	13.3%
	55+	20	13.3%

जगह	**गुरुग्राम**	80	53.3%
	अन्य एनसीआर क्षेत्र	70	46.7%
धार्मिक संबद्धता	**हिन्दू**	110	73.3%
	मुसलमान	25	16.7%
	सिख	10	6.7%
	ईसाई	5	3.3%

यह तालिका 150 उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय अवलोकन प्रदान करती है, जिसमें लिंग, आयु, स्थान और धार्मिक संबद्धता जैसी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। उत्तरदाताओं का बहुमत महिला (53.3प्रतिशत) है, जबकि पुरुष नमूने का 46.7 प्रतिशत हिस्सा हैं। आयु वितरण एक संतुलित प्रतिनिधित्व दिखाता है, जिसमें प्रतिभागियों की सबसे अधिक संख्या (30 प्रतिशत) 25–34 आयु वर्ग में आती है, इसके बाद 18–24 आयु वर्ग में 23.3 प्रतिशत हैं। प्राथमिक अध्ययन क्षेत्र गुरुग्राम में 53.3 प्रतिशत उत्तरदाता हैं, जो शहरी दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि 46.7 प्रतिशत अन्य एनसीआर क्षेत्रों से हैं। धार्मिक संबद्धता के संदर्भ में, हिंदू बहुमत (73.3 प्रतिशत) बनाते हैं, इसके बाद मुस्लिम (16.7 प्रतिशत), सिख (6.7 प्रतिशत), और ईसाई (3.3 प्रतिशत) हैं।

4.2 सर्वेक्षण प्रश्न विश्लेषण तालिका

सर्वेक्षण में पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों से संबंधित 15 प्रश्न पूछे गए। नीचे दी गई तालिका में प्रत्येक श्रेणी में उत्तरदाताओं की संख्या और उनके संबंधित प्रतिशत के साथ उत्तरों का सारांश दिया गया है।

तालिका 2. सर्वेक्षण प्रश्न विश्लेषण

सवाल	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**सहमत (%)**	**असहमत (%)**	**तटस्थ (%)**
1. **शिक्षा में सम्मान और अनुशासन जैसे पारंपरिक मूल्यों पर जोर दिया जाना चाहिए।**	150	85%	10%	5%

2. **आधुनिक शिक्षा को रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच पर अधिक ध्यान देना चाहिए।**	150	80%	15%	5%
3. **वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक एवं नैतिक विकास का अभाव है।**	150	70%	20%	10%
4. **शिक्षा में पारंपरिक और आधुनिक दोनों मूल्यों का समावेश होना चाहिए।**	150	90%	5%	5%
5. **आधुनिक शिक्षा में परीक्षा और ग्रेड पर जोर सीखने के लिए हानिकारक है।**	150	65%	25%	10%
6. **शिक्षकों को सिर्फ शैक्षणिक निर्देश ही नहीं, बल्कि चरित्र विकास में भी भूमिका निभानी चाहिए।**	150	78%	15%	7%
7. **प्रौद्योगिकी ने आधुनिक शिक्षा में काफी सुधार किया है।**	150	88%	8%	4%
8. **पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित किया जाना चाहिए और पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए।**	150	75%	15%	10%
9. **शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और न्याय का साधन होनी चाहिए।**	150	82%	12%	6%
10. **आधुनिक शिक्षा व्यक्तिगत सफलता पर बहुत अधिक जोर देती है।**	150	60%	30%	10%
11. **समग्र विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा आवश्यक है।**	150	95%	3%	2%
12. **भारत में शिक्षा को व्यावसायिक कौशल पर अधिक ध्यान देना चाहिए।**	150	55%	35%	10%
13. **स्कूलों को शैक्षणिक ज्ञान और जीवन कौशल दोनों सिखाना चाहिए।**	150	90%	7%	3%
14. **ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि दोनों पर ध्यान दे।**	150	85%	10%	5%
15. **आधुनिक शिक्षा छात्रों को वैश्विक चुनौतियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करती है।**	150	80%	15%	5%

यह तालिका पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों पर दृष्टिकोणों का आकलन करने वाले 15 प्रश्नों के उत्तरों का सारांश प्रस्तुत करती है। उदाहरण के लिए, 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि सम्मान और अनुशासन जैसे पारंपरिक मूल्यों पर

जोर दिया जाना चाहिए, जो नैतिक शिक्षा के लिए मजबूत समर्थन को दर्शाता है। इसी तरह, 80 प्रतिशत का मानना था कि आधुनिक शिक्षा में रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो वैश्विक दक्षताओं के महत्व को दर्शाता है। उल्लेखनीय रूप से, 90 प्रतिशत सहमत थे कि शिक्षा में पारंपरिक और आधुनिक दोनों मूल्यों को एकीकृत किया जाना चाहिए, जो एक संकर दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करता है। जबकि 65 प्रतिशत ने आधुनिक शिक्षा में परीक्षाओं पर जोर देने के बारे में चिंता व्यक्त की, 88 प्रतिशत ने प्रौद्योगिकी के सकारात्मक प्रभाव को स्वीकार किया। उत्तरों ने मूल्य–आधारित शिक्षा के महत्व पर आम सहमति दिखाई, जिसमें 95 प्रतिशत समग्र विकास के लिए इसकी आवश्यक भूमिका पर सहमत थे। ये अंतर्दृष्टि उत्तरदाताओं के बीच एक सूक्ष्म समझ को प्रदर्शित करती है, जो एक संतुलित शैक्षिक प्रणाली की वकालत करती है।

4.3 परिकल्पना परीक्षण

पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच संबंधों की जांच करने के लिए, गुरुग्राम और आसपास के एनसीआर क्षेत्रों के 150 उत्तरदाताओं के साथ निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

परिकल्पना १: सामाजिक विकास को आकार देने में पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

शून्य परिकल्पना (एच□): पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच□): पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका 3: माध्य की तुलना के लिए स्वतंत्र टी–टेस्ट

चर	पारंपरिक शिक्षा (एन=150)	आधुनिक शिक्षा (एन=150)	टी मूल्य	पी-मूल्य
चरित्र विकास	3.8	3.2	3.12	0.001
शैक्षिक उपलब्धि	4.1	4.5	-2.89	0.004

यह तालिका एक स्वतंत्र टी–टेस्ट का उपयोग करके पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों की धारणाओं में अंतर की जांच करती है। परिणाम बताते हैं कि पारंपरिक शिक्षा चरित्र विकास (औसत = 3.8) का दृढ़ता से समर्थन करती है, जिसका महत्वपूर्ण टी–वैल्यू 3.12 (पी = 0.001) है। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा शैक्षणिक उपलब्धि (औसत = 4.5) पर उच्च स्कोर करती है, जिसका महत्वपूर्ण नकारात्मक टी–वैल्यू –2.89 (पी = 0.004) है। ये निष्कर्ष दो प्रणालियों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं, जहाँ पारंपरिक शिक्षा नैतिक और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि आधुनिक शिक्षा बौद्धिक और व्यावसायिक उत्कृष्टता पर जोर देती है। यह इस परिकल्पना का समर्थन करता है कि दोनों शैक्षिक मॉडल सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को विशिष्ट रूप से आकार देते हैं।

परिकल्पना 2: मूल्य–आधारित शिक्षा छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास को प्रभावित करती है।

एच□ (शून्य परिकल्पना): मूल्य–आधारित शिक्षा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकास के बीच कोई संबंध नहीं है।

एच□ (वैकल्पिक परिकल्पना): मूल्य–आधारित शिक्षा का भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

तालिका 4: काई–स्क्वायर टेस्ट

चर	पारंपरिक शिक्षा (एन=150)	आधुनिक शिक्षा (एन=150)	ची-स्क्वायर	पी-मूल्य
मूल्य-आधारित शिक्षा	128	105	9.83	0.02
व्यावसायिक कौशल पर जोर	75	125	12.4	0.005

यह तालिका ची–स्क्वायर परीक्षण का उपयोग करके शैक्षिक मूल्यों और विशिष्ट परिणामों के बीच संबंध का मूल्यांकन करती है। परिणाम मूल्य–आधारित शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध दर्शाते हैं, जिसका ची–स्क्वायर मान 9.83 (पी = 0. 02) है। इसी तरह, आधुनिक शिक्षा में व्यावसायिक कौशल पर जोर काफी अधिक है, जिसका ची–स्क्वायर मान 12.4 (पी = 0.005) है। ये परिणाम बताते हैं कि पारंपरिक शिक्षा नैतिक और नैतिक विकास को बढ़ावा देने के साथ अधिक संरेखित है, जबकि आधुनिक शिक्षा कार्यबल की तत्परता के लिए व्यावहारिक कौशल को प्राथमिकता देती है। महत्वपूर्ण पी–मान इन संबंधों की प्रासंगिकता को प्रदर्शित करते हैं, इस परिकल्पना को मान्य करते हैं कि शैक्षिक मूल्य व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के विशिष्ट पहलुओं को प्रभावित करते हैं।

5. चर्चा

परिकल्पना परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष सामाजिक विकास और व्यक्तिगत विकास को आकार देने में पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच महत्वपूर्ण अंतर को रेखांकित करते हैं। पारंपरिक शिक्षा, विशेष रूप से गुरुकुल प्रणाली, आध्यात्मिक विकास और सामुदायिक जुड़ाव को एकीकृत करते हुए नैतिक और चरित्र विकास पर जोर देती थी। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि पारंपरिक शिक्षा भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक जिम्मेदारी और व्यक्तिगत अखंडता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सुखीजा एट अल. (2014) द्वारा पहले किए गए शोध से मेल खाता है, जिसमें अच्छे व्यक्तित्व के

निर्माण में सम्मान, अनुशासन और ईश्वर से जुड़ाव जैसे मूल्यों की अभिन्न भूमिका पर जोर दिया गया था। दूसरी ओर, बौद्धिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर अपने ध्यान के साथ आधुनिक शिक्षा ने शिक्षा के नैतिक और नैतिक आयामों की लगातार उपेक्षा की है (इंद्राणी, 2012)। सर्वेक्षण के आंकड़ों से पता चलता है कि 70 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि वर्तमान प्रणाली में नैतिक और नैतिक विकास पर जोर नहीं दिया गया है, जो शिक्षा के संकीर्ण होते फोकस के बारे में बढ़ती चिंता को दर्शाता है।

जबकि पारंपरिक शिक्षा चरित्र और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास पर जोर देती है, आधुनिक शिक्षा काफी हद तक वैश्वीकृत दुनिया की जरूरतों के अनुसार आकार लेती है, जो आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और तकनीकी साक्षरता पर ध्यान केंद्रित करती है। सर्वेक्षण के परिणाम यह भी संकेत देते हैं कि आधुनिक शिक्षा, अकादमिक उपलब्धि और व्यावसायिक कौशल पर जोर देने के साथ, अक्सर छात्रों को वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करने के साथ अधिक संरेखित के रूप में देखी जाती है (विक्रम, 2024)। लगभग 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि आधुनिक शिक्षा छात्रों को वैश्विक चुनौतियों के लिए बेहतर तरीके से तैयार करती है, जो आज के प्रतिस्पर्धी माहौल में ऐसे कौशल सेट की आवश्यकता पर जोर देती है। हालांकि, प्रभाकर (2023) द्वारा उजागर किए गए विशुद्ध रूप से अकादमिक और व्यावसायिक फोकस की ओर बदलाव, पारंपरिक शैक्षिक प्रणालियों में जोर दिए गए समग्र विकास को कमजोर करने का जोखिम उठाता है, जो जिम्मेदार, सहानुभूतिपूर्ण नागरिकों के विकास में बाधा बन सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षाशास्त्र दोनों को एकीकृत करने वाले एक संकर दृष्टिकोण का प्रस्ताव करके इन दो शैक्षिक प्रतिमानों को जोड़ने का प्रयास करती है। इसे एक संतुलित शिक्षा प्रणाली विकसित करने के प्रयास के रूप में देखा जाता है जो बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करती है। उत्तरदाताओं ने इस विचार का भारी समर्थन किया कि शिक्षा में पारंपरिक और

आधुनिक दोनों मूल्यों को शामिल किया जाना चाहिए, 90 प्रतिशत सहमत थे कि इस तरह के एकीकरण से छात्रों को लाभ होगा। यह निष्कर्ष मिश्रा और ऐथल (2023) द्वारा व्यक्त किए गए विचारों के अनुरूप है, जो तर्क देते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षा को समकालीन तरीकों के साथ मिलाने से एक अधिक व्यापक और समावेशी शिक्षा प्रणाली बन सकती है। हालांकि, इस संतुलन को प्राप्त करने में एनईपी की सफलता इसके व्यावहारिक कार्यान्वयन पर निर्भर करती है, विशेष रूप से वैश्विक शिक्षा मानकों की मांगों के अनुकूल होते हुए स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित करने पर।

हाइब्रिड मॉडल के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया के बावजूद, पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक शैक्षिक ढांचे की मांगों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में चुनौतियां बनी हुई हैं। जैसा कि सर्वेक्षण के आंकड़ों से पता चला है, आधुनिक शिक्षा सामूहिक सामाजिक मूल्यों पर व्यक्तिगत उपलब्धि को प्राथमिकता देती है, 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि आधुनिक शिक्षा व्यक्तिगत सफलता पर बहुत अधिक जोर देती है। इस प्रवृत्ति को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली की विशेषता है (विनोद, 2016)। इसके अलावा, जबकि तकनीक ने शैक्षिक पहुंच और सीखने के अनुभवों को बढ़ाया है, जैसा कि 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आधुनिक शिक्षा में तकनीक के सकारात्मक प्रभाव पर सहमति व्यक्त की है, यह मानव–केंद्रित, मूल्य–आधारित शिक्षा को प्रभावित करने का भी जोखिम उठाता है जिस पर पारंपरिक मॉडल जोर देते हैं। इस प्रकार पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक प्रणालियों का एकीकरण तनाव से भरा है।

6. निष्कर्ष

यह अध्ययन भारत में पारंपरिक और आधुनिक शैक्षिक मूल्यों के बीच संतुलन के महत्व को रेखांकित करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि आधुनिक शिक्षा अकादमिक और व्यावसायिक विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि पारंपरिक शिक्षा नैतिक अखंडता,

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य अधिक समग्र शैक्षिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर इन दो प्रतिमानों को जोड़ना है, जो बौद्धिक और चरित्र विकास दोनों को महत्व देता है। हालाँकि, इन मॉडलों में सामंजस्य स्थापित करने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं, विशेष रूप से आधुनिक पद्धतियों को अपनाते हुए पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण के संबंध में। इन चुनौतियों के बावजूद, दोनों शैक्षिक दृष्टिकोणों का एकीकरण एक अधिक समावेशी, सर्वांगीण शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए आशाजनक अवसर प्रदान करता है जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करते हुए समकालीन समाज की माँगों को पूरा करती है। भविष्य के शोध को व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास पर इस एकीकृत मॉडल के दीर्घकालिक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह न केवल अकादमिक उत्कृष्टता बल्कि सामाजिक और भावनात्मक विकास को भी बढ़ावा देता है।

संदर्भ

- सुखीजा, वी., रानी, पी., और सुखीजा, डी. (2014)। भारत में शिक्षाः पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज, 4(4), 366।
- पाटिल, वी.के., और पाटिल, के.डी. (2023)। पारंपरिक भारतीय शिक्षा मूल्य और भारत द्वारा अपनाई गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति। जर्नल ऑफ एजुकेशन, 203(1), 242–245।
- इंद्राणी, बी. (2012). आधुनिक समय में मूल्य शिक्षा का महत्व। एजुकेशन इंडिया जर्नलः डायलॉग्स ऑन एजुकेशन का त्रैमासिक रेफरी जर्नल, 1(3), 35–42.

- बावरवा, ए.एल. (2022)। पारंपरिक और आधुनिक समाजों के बीच परस्पर क्रिया का विश्लेषणः एक व्यापक अन्वेषण। विद्यायन–एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक सहकर्मी–समीक्षित ई–जर्नल–आईएसएसएन 2454–8596, 8(3)।
- मिश्रा, एन., और ऐथल, पी.एस. (2023)। प्राचीन भारतीय शिक्षाः आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता और महत्व। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ केस स्टडीज इन बिजनेस, आईटी, एंड एजुकेशन (आईजेसीएसबीई), 7(2), 238–249।
- कुमार, ए. (2001)। आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. सरूप एंड संस।
- प्रभाकर, ए.के. (2023). पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा का अंतर्संबंधः भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में लोक शिक्षाशास्त्र की क्षमता का पता लगाना। क्रिएटिव लॉन्चर, 8(2), 115–121.
- विक्रम, के. (2024). पारंपरिक समाज में आधुनिक विवाहः भारत में विवाह पर कॉलेज शिक्षा का प्रभाव। जर्नल ऑफ फैमिली इश्यूज, 45(5), 1116–1141.
- कैजेटे, जीए, और पुएब्लो, एससी (2010)। समकालीन स्वदेशी शिक्षाः 21वीं सदी की दुनिया के लिए प्रकृति–केंद्रित अमेरिकी भारतीय दर्शन। फ्यूचर्स, 42(10), 1126–1132।
- चौबे, ए.के. चौबे, ए.के. (2015). भारतीय जीन में शांति और मूल्यः आधुनिक रणनीतियों सहित, जैन चंद्रकांता में। (सं.) शांति और मूल्य के लिए शिक्षा। प्रांजल प्रकाशन। सागर। एम.पी. पी.पी. 353–360. आईएसबीएनः 978–81–89740–10–8.
- विनोद, आर. (2016). आधुनिक भारत में मूल्यों पर बातचीतः एक सैद्धांतिक अन्वेषण. जर्नल ऑफ ह्यूमन वैल्यूज, 22(1), 57–66.
- साहिन, ए. (2018). इस्लामी शिक्षा अध्ययन में महत्वपूर्ण मुद्देः शिक्षा के इस्लामी और पश्चिमी उदार धर्मनिरपेक्ष मूल्यों पर पुनर्विचार। धर्म, 9(11), 335.

- टैन, सी. (2012). सिंगापुर में "हमारे सांझा मूल्य": एक कन्फ्यूशियन परिप्रेक्ष्य। शैक्षिक सिद्धांत, 62(4), 449–463।
- वेलासकर, पी. (2012). मुक्ति के लिए शिक्षाः अंबेडकर के विचार और दलित महिलाओं के दृष्टिकोण। समकालीन शिक्षा संवाद, 9(2), 245–271.
- फ्रेडरिक लिटरेल, आर., और बर्टश, ए. (2013)। पितृसत्तात्मक क्षेत्र में महिलाओं की पारंपरिक और समकालीन स्थिति। समानता, विविधता और समावेशः एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 32(3), 310–324।